8. निः श्ल्यो व्रती – स०सू० 7/18
9. अगार्यनगारइय, वही, 7/19
10. अणुव्रतों मारी – वही, 7/20
11. तत्वार्थ सूत्र 7/21
12. र०श्र० 51
13. उपा० 314
14. चा०पा०गा० 24
15. सा परदारनवृत्तिः स्वदारसन्तोषनामापि – रा०श्र 59
16. परमितपरिग्रह स्थादिच्छामरिमाणनामाणि – वही, 61
17. प०च० 14/184–85
18. ह०पु० 10 : 7–8
19. आ०पु० 10/63
20. सा०थ० 4/51
21. र०श्रा० 53
22. स०सि० 7/12
23. स०वा० 7
24. पु०सि० 43–89

प्राचीन भारतीय शासन प्रणाली में सम्राट खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख का योगदान

अयोध्या राम*
डॉ० अरविन्द कुमार*

प्राचीनता की दृष्टि से सम्राट खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख स्थानीय राजवंश का प्राचीनतम् महत्त्वपूर्ण अभिलेख है तथा सम्राट् अशोक के बाद का है। मौर्येतर युगीन अभिलेखों में खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख का विशेष महत्त्व है। यह अभिलेख अपने ढंग का अनूठा है। इसमें कलिंग (उड़ीसा) के राजा खारवेल के शासनकाल के प्रथम तेरह वर्षों की घटनाओं का वर्णन है। यह उड़ीसा के पुरी जिले के भुवनेश्वर मन्दिर से तीन मील पश्चिम की ओर स्थित उदगिरि–खण्डगिरि नाम की पहाड़ियों से बनी प्राचीन जैन गुफाओं मे से एक है, जो हाथीगुम्फा अभिलेख के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें सत्रह पंक्तियाँ है जो करीब चौरासी वर्गफुट क्षेत्रफल में लिखी गयी है। इसके अक्षर काफी बड़े हैं और गहरे खुदे गये हैं, परन्तु काल–कारण से यह लेख इतना क्षतिग्रस्त है कि इसका पाठोद्वारा समुचित रूप से कर सकना किसी के लिए सम्भव नहीं हो सका है। यह अभिलेख, प्राचीन शौरसेनी प्राकृत–भाषा और ब्राह्मी–लिपि में उत्कीर्ण है। इसके काल के सम्बन्ध में विद्वानों में काफी मतभेद है। कुछ लोग इसे ईसा पूर्व की दूसरी शती के मध्य रखते है और इसे कुछ काफी पीछे का मानते हैं। इसी प्रकार कुछ लोग इसके काल की सीमा ई०पू० पहली शती अथवा पहली शती का आरम्भ अनुमान करते है। अतः खारवेल का समय, शिलालेख के आधार पर और अधिकांश विद्वानों की सम्पति को ध्यान में रखते हुए पहली शती ई०पू० में ही ठहराया जा सकता है। खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख से ज्ञात होता है कि खारवेल चेदिवंश के थे और कलिंग राजवंश की तीसरी पीढ़ी में हुए थे। इस अभिलेख से यह भी ज्ञात होता है कि खारवेल को जैन धर्म के प्रति आस्था थी।[1]

हाथीगुम्फा अभिलेख के लेखक अज्ञात हैं, परन्तु जयसवाल के मतानुसार, वह कोई उच्च और वयोवृद्ध पदाधिकारी रहा होगा जिसने खारवेल को एक शिशु

***शोध छात्र, स्नातकोत्तर प्राकृत एवं जैनशास्त्र विभाग वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)**
***शोध निर्देशक सह अध्यक्ष प्राकृत विभाग, सर्वोदय कॉलेज गंजभड़सरा, रोहतास**

के रूप में क्रीड़ा करते देखा होगा और जिसे सम्राट् के उस रूप का वर्णन करने का अधिकार माना गया होगा। यह भी अनुमान किया जा सकता है कि उत्कीर्ण किए जाने के पूर्व इसे स्वयं खारवेल ने स्वीकृत किया होगा।[2]

सम्राट् खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख जैन अर्हतों की स्तुति से प्रारम्भ होता है, परन्तु इसका उद्देश्य लौकिक है। इसमें खारवेल के शासन काल की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को गिनाया गया है, अर्थात् इसमें प्रतापी राजा खारवेल के जीवन–वृत्तान्तों का वर्णन है। इस दृष्टि से यह समुद्रगुप्त की प्रयाग–प्रशस्ति से तुलनीय है। आरम्भ में खारवेल के शैशव अवस्था की चर्चा करते हुए उनके खेल–कूद और शिक्षा का उल्लेख किया गया है। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में वे युवराज हुए और चौबीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने राजभार ग्रहण किया अर्थात् राजा बने। तदन्तर तेरह वर्ष तक शासन के रूप में उन्होंने जो कुछ भी किया उसका उल्लेख इस लेख में है। अपने शासन काल में प्रथम वर्ष में तूफान से नष्ट कलिंग नगरी खिबिर अर्थात् राजधानी का पुनर्निर्माण और प्रजा का रंजन करते हैं। दूसरे वर्ष, शातकर्णि की परवाह न करते हुए पश्चिम पर आक्रमण करते हैं तथा मुषिक नगर या ऋषिक नगर को त्रास पहुँचाते हैं। तीसरे वर्ष, प्रहसन, नृत्य, गीत, वादन, उत्सव और समाज आदि द्वारा प्रजा का मनोरंजन करवाते हैं। चौथे वर्ष, विधाधराधिवास का पुनर्निमाण और सभी राष्ट्रिय एवं भोजकों का दमन कर अपने चरणों की वंदना करवाते है। पाँचवे वर्ष, नन्दराज द्वारा उद्घाटित नहर को राजधानी में लाते हैं। छठे वर्ष राज्य–कर काफी द्वारा प्रजा का अनुग्रह करते है। सातवें वर्ष का वर्णन अपठ्य है, फिर भी कुछ विद्वानों ने इस वर्ष उन्हें वजिर घरवती नाम्नी रानी से सन्तान प्राप्ति का अनुमान करते हैं। आठवे वर्ष में, गोरथगिरि और राजगृह पर आक्रमण करते है, जिससे डर कर यवन राज मथुरा की ओर भाग जाता है। नवें वर्ष में, ब्राह्मणों को दान देते हैं तथा महाविजय नामक प्रासाद का निर्माण करवाते है।[3] दसवें वर्ष में 'भारतवर्ष' पर आक्रमण और ग्याहरवें वर्ष में, पिथुण्ड नगर का विनाश तथा जिन भगवान के प्रति दम्भ कराने वाले तमर की मूर्ति संघात को विध्वसं कराते हैं। बारहवें वर्ष में 'उत्तरापथ' के राजाओं को त्रस्त करते है। मगध राज बृहस्पति मित्र पर विजय प्राप्त कर कलिंग जिनकी मूर्ति को वापस लाते हैं तथा मगध, अंग और पाण्ड्य राजाओं की सम्पत्ति का हरण करते हैं। तेरहवें वर्ष में, कुमारी पर्वत पर जैन साधुओं के वर्षावास और वर्षाकालीन याप करने के निमित्त गुफाएँ खुदवाते हैं। इसके बाद खारवेल द्वारा किसी भवन के निर्माण का उल्लेख है तथा खारवेल की उपाधियों एवं महत्ता का वर्णन प्राप्त होता है।

वस्तुतः हाथीगुम्फा अभिलेख में कलिंग नरेश खारवेल के कार्यों की चर्चा है, किन्तु अपने रूप में वह अभिलेखों में प्राप्त होनेवाली राजप्रशस्तियों से सर्वथा भिन्न है।[4] वह अत्युक्तिपूर्ण प्रशस्ति न होकर मात्र वृत्त आलेख है।

मौर्योत्तर युगीन अभिलेखों में सम्राट् खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख का विशेष महत्त्व है। खारवेल का यह शिलालेख भारतीय इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह उड़ीसा की राजधानी भुनेश्वर के पास उदयगिरि पर्वत की एक गुफा में खुदा हुआ मिला है, जो हाथीगुम्फा के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें राजा खारवेल के शासन काल के तेरह वर्ष की घटनाओं का वर्णन है। इसकी लिपि ब्राह्मी है। भाषा की दृष्टि से भी इसका बहुत महत्व है, क्योंकि यह एक प्राचीन भारतीय अभिलेख है जो प्राचीन शौरसेनी प्राकृत–भाषा में लिखा हुआ है। इसके शब्द विन्यास रचयिता की काव्य कुशलता का संकेत देता है।

इसके शब्द नपे तुले हैं। इसका लेखक अज्ञात है। वर्णन शैली में यह अशोक के अभिलेखों से बिल्कुल भिन्न है, क्योंकि अशोक के अभिलेख मौर्यनरेश के व्यक्तिगत विचारों की अभिव्यक्ति है, जबकि हाथीगुम्फा अभिलेख में खारवेल के शासन–काल की घटनाओं का वर्णन है। इस दृष्टि से यह समुद्रगुप्त की प्रयाग–प्रशस्ति के निकटतर है, किन्तु कुछ बातों में यह लेख प्रयोग–प्रशस्ति से भी भिन्न है। डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री के अनुसार खारवेल के शिलालेख की भाषा प्राचीन शौरसेनी या जैन शौरसेनी है।[5] यद्यपि इस शिलालेख में प्राचीन शौरसेनी की समस्त प्रवृत्तियाँ परिलक्षित नहीं होती है, तो भी इसे उसका आदिम रूप मानने में किसी प्रकार का विरोध नहीं है।

सम्राट खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख से ज्ञात होता है कि नन्द के समय में उत्कल या कलिंग देश में जैन धर्म का प्रचार था। उस समय आदि जिन भगवान की मूर्ति पूजी जाती थी। खारवेल ने मगध पर दो बार चढ़ाई की और वहाँ के राजा बहसतिमित को पराजित किया। कलिग–जिन मूर्ति को नन्द उड़ीसा से पटना उठा लाये थे। सम्राट खारवेल ने मगध पर आक्रमण कर शताब्दियों के बाद बदला चुकाया और अपने पूर्वजों की मूर्ति वापस ले गया। दक्षिण आन्ध्रवंशी राजा शातकर्णी, खारवेल का समकालीन था। शिलालेख से ज्ञात होता है कि शातकर्णी की परवाह न कर खारवेल ने दक्षिण में एक बड़ी भारी सेना भेजी, जिसने दक्षिण के कई राज्यों के राजाओं को परास्त किया। उत्तर से लेकर दक्षिण तक समस्त भारत में उसकी विजय पताका फहराई। इस अभिलेख से यह भी ज्ञात होता है कि खारवेल एक वर्ष विजय के लिए निकलता था तो दूसरे वर्ष महल आदि बनवाता, दान देता तथा प्रजा के हित सुख का कार्य करता था। विजय यात्रा के पश्चात् राजैश्वर्य का प्रदर्शन किया और ब्राह्मणों को बड़े–बड़े दान दिया। उसने

एक बड़ा सम्मेलन किया था, जिसमें भारत भर के प्रसिद्ध जैनियों, तपस्वियों, ऋषियों तथा पण्डितो को बुलाया था। इस संघ ने खारवेल को खोमराजा, भिक्षुराज और धर्मराजा की पदवी प्रदान की थी।

सम्राट् खारवेल का यह अभिलेख ई०पू० 15–100 के लगभग का है। ऐतिहासिकों का मत है कि मौर्यकाल की वंश परम्परा तथा कालगणना की दृष्टि से इसका महत्त्व अशोक के शिलालेखों से भी अधिक है। देश में उपलब्ध प्राचीन अभिलेखों में यही एक ऐसा अभिलेख है, जिसमें वंश तथा वर्ष संख्या का स्पष्ट उल्लेख हुआ है। प्राचीनता की दृष्टि से यह अशोक के बाद का शिलालेख माना जाता है। इसमें तत्कालीन सामाजिक अवस्था और राज्य–व्यवस्था का सुन्दर चित्रण है। 'भारतवर्ष' का सर्वप्रथम उल्लेख इसी अभिलेख के दशवीं पंक्ति में 'भरध ावश' अर्थात् भारतवर्ष के रूप में मिलता है। इस देश का भारतवर्ष नाम है, इसका पाषाणोत्कीर्ण प्रमाण यही अभिलेख हे।

अतः कहा जा सकता है कि सामजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक एवं साहित्यिक दृष्टि से हाथीगुम्फा अभिलेख का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

अतः खारवेल एक सफल सेनापति, सुप्रसिद्ध शासक, प्रजा प्रिय राजा, लोभी विजयी नरेश लूटे और छिने गये सम्पत्ति के स्वामी, क्रूर स्वभावी तथा धार्मिक दृष्टि से उदार चेता था। उसके विजय अभियान का मूल उद्देश्य साम्राज्य का विस्तार न होकर केवल सम्पत्ति प्राप्त करना था। खारवेल एक बहुत ही भाग्यशाली व्यक्ति था, जिसका उदय ऐसे समय में हुआ था जब मगध साम्राज्य का पतन हो चुका था और शूंगों का स्थान लेनेवाली कोई शक्ति आविर्भूत नहीं हो पाई थी। सातवाहन राज्य का भी यह उदय काल ही था। ऐसे स्थिति में सम्राट खारवेल ने राजनीतिक लाभ उठाते हुए अपने पड़ोस में स्थित राज्यों में अनयास लूट–पाट किया और सुप्रसिद्ध शासक की पंक्ति में अपना नाम अंकित करा लिया।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. प्राचीन अभिलेख – सी.पी. सिन्हा, पृ. 56
2. प्राकृत के प्रमुख अभिलेख – पृ. 83
3. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन – पृ. 156
4. प्राचीन भारत, पृ. 126
5. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास